रविवार 6 सितंबर, 2026

विषय — आदमी

स्वर्ण पाठ: मत्ती 26: 41

"जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 8: 1, 3-6

1 हेयहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।
3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तरागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं;
4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।
6 तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. याकूब 1: 2-4, 8, 12-14

2 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो
3 तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
4 पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे॥
8 वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है॥
12 धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।
13 जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।
14 परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंच कर, और फंस कर परीक्षा में पड़ता है।

2. 1 कुरिन्थियों 10: 13

---

13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको॥

3. उत्पत्ति 39: 1-12

1 जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री, जो फिरौन का हाकिम, और जल्लादों का प्रधान था, उसने उसको इश्माएलियों के हाथ, से जो उसे वहां ले गए थे, मोल लिया।

2 और यूसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था; सो वह भाग्यवान पुरूष हो गया।

3 और यूसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है।

4 तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया गया: फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बना के अपना सब कुछ उसके हाथ में सौप दिया।

5 और जब से उसने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था, सब पर यहोवा की आशीष हो ने लगी।

6 सो उसने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया: कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। और यूसुफ सुन्दर और रूपवान् था।

7 इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर आंख लगाई; और कहा, मेरे साथ सो।

8 पर उसने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, सुन, जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है; उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौप दिया है।

9 इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उसने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा; सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं?

10 और ऐसा हुआ, कि वह प्रति दिन यूसुफ से बातें करती रही, पर उसने उसकी न मानी, कि उसके पास लेटे वा उसके संग रहे।

11 एक दिन क्या हुआ, कि यूसुफ अपना काम काज करने के लिये घर में गया, और घर के सेवकों में से कोई भी घर के अन्दर न था।

12 तब उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़कर कहा, मेरे साथ सो, पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया।

4. 1 यूहन्ना 5: 18-21

18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

19 हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

21 हे बालको, अपने आप को मुरतों से बचाए रखो॥

5. मत्ती 3: 16, 17

16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।

17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं॥

6. मत्ती 4: 1-11

1 तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।

2 वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी।

3 तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।

4 उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

5 तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया।

6 और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।

7 यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।

8 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर

9 उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।

10 तब यीशु ने उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।

11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥

7. मत्ती 5: 1, 2

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।

2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

8. मत्ती 6: 9 (से :), 13

9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।

13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 470: 23-24

मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व की अभिव्यक्ति है।

2. 475: 28 (यह)-31

असली इंसान पवित्रता से दूर नहीं जा सकता, न ही भगवान, जिससे इंसान बना है, पाप करने की काबिलियत या आज़ादी दे सकता है।

3. 387: 27-32

ईसाइयत का इतिहास अपने स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान मन, द्वारा मनुष्य पर समर्थित शक्ति और रक्षा शक्ति के उदात्त प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को विश्वास और समझ प्रदान करता है जिससे वह खुद का बचाव करता है, न केवल प्रलोभन से, बल्कि शारीरिक से।

4. 192: 17-31

नैतिक और आध्यात्मिक आत्मा से संबंधित हो सकते हैं, जो "मुट्ठी में हवा" रखता है; और यह शिक्षण विज्ञान और सद्भाव के साथ उच्चारण करता है। विज्ञान में, आपके पास भगवान के विपरीत कोई शक्ति नहीं हो सकती है, और शारीरिक इंद्रियों को अपनी झूठी गवाही देनी चाहिए। अच्छे के लिए आपका प्रभाव आपके द्वारा सही पैमाने पर फेंके गए वजन पर निर्भर करता है। आप जो अच्छा करते हैं और अवतार लेते हैं वह आपको एकमात्र शक्ति प्राप्त करने योग्य बनाता है। बुराई शक्ति नहीं है। यह ताकत का मजाक है, जो अपनी कमजोरी को मिटाता है और गिरता है, कभी नहीं उठता।

हम ईश्वरीय तत्वमीमांसा की समझ में अपने गुरु के उदाहरण का अनुसरण करके सत्य और प्रेम के नक्शेकदम पर चलते हैं। ईसाई धर्म सच्ची चिकित्सा का आधार है। जो कुछ भी मानव विचार को निःस्वार्थ प्रेम के अनुरूप रखता है, वह सीधे दैवीय शक्ति प्राप्त करता है।

5. 170: 28-8 (से *4th* ,)

मनुष्य का वर्णन विशुद्ध रूप से भौतिक या भौतिक और आध्यात्मिक दोनों के रूप में - लेकिन किसी भी मामले में उसके शारीरिक संगठन के आधार पर, - एक पेंडोरा बॉक्स है, जिसमें से सभी बीमारियां निकल गई हैं, विशेष रूप से निराशा। सामग्री, जो दैवीय शक्ति को अपने हाथों में लेती है और एक निर्माता होने का दावा करती है, एक कल्पना है, जिसमें बुतपरस्ती और वासना समाज द्वारा इतनी स्वीकृत हैं कि मानव जाति ने अपने नैतिक छूत को पकड़ लिया है।

भौतिकता के आध्यात्मिक विपरीत के माध्यम से, यहां तक कि मसीह, सत्य के माध्यम से भी, मनुष्य दिव्य विज्ञान की कुंजी के साथ स्वर्ग के द्वार को फिर से खोल देगा, जिसके बारे में मनुष्यों का मानना है कि वे बंद थे, और वह खुद को बेदाग, ईमानदार, शुद्ध और स्वतंत्र पाएंगे।

6. 67: 18-24

यह धारणा कि जानवर के चरित्र संभवतः बल दे सकते हैं, विचार के लिए बहुत ही बेतुका है जब हम याद करते हैं कि आध्यात्मिक महत्व के माध्यम से हमारे भगवान और गुरु ने बीमारों को चंगा किया, मृतकों को उठाया, और हवाओं और लहरों को भी उसे मानने की आज्ञा दी। अनुग्रह और सत्य अन्य सभी साधनों और विधियों से अधिक शक्तिशाली हैं।

7. 234: 25-3

प्रकट होने से पहले पाप और बीमारी के बारे में सोचा जाना चाहिए। आपको पहले उदाहरण में बुरे विचारों को नियंत्रित करना होगा, या वे दूसरे में आपको नियंत्रित करेंगे। यीशु ने घोषित किया कि निषिद्ध वस्तुओं पर इच्छा के साथ देखना एक नैतिक अवधारणा को तोड़ना था। उन्होंने मानव मन की क्रिया पर बहुत जोर दिया, इंद्रियों को अनदेखा किया।

बुराई के विचार और उद्देश्य किसी भी हद तक नहीं पहुंचते हैं और किसी के विश्वास परमिट से अधिक नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। बुराई के विचार, वासना और दुर्भावनापूर्ण उद्देश्य आगे नहीं बढ़ सकते हैं, जैसे पराग को भटकाना, एक मानव मन से दूसरे में, असुरक्षित पोजिशन ढूंढना, अगर सद्गुण और सत्य एक मजबूत रक्षा का निर्माण करते हैं।

8. 56: 15-3

विवाह की वाचा के प्रति बेवफाई सभी जातियों का सामाजिक अभिशाप है,"मरी जो अन्धेरे में फैलती है, ... महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है॥" यह आज्ञा कि, "तू व्यभिचार न करना" इससे कम जरूरी नहीं है कि, "तू खून न करना"॥

शुद्धता सभ्यता और प्रगति का सीमेंट है। इसके बिना समाज में कोई स्थिरता नहीं है, और इसके बिना कोई भी जीवन विज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता है.

9. 407: 6-16

सबसे अथक स्वामी के लिए मनुष्य की दासता - जुनून, स्वार्थ, ईर्ष्या, घृणा और बदला - केवल एक शक्तिशाली संघर्ष द्वारा विजय प्राप्त की जाती है। हर घंटे की देरी संघर्ष को और गंभीर बना देती है। यदि मनुष्य जुनून पर विजयी नहीं होता है, तो वे खुशी, स्वास्थ्य, और मर्दानगी को कुचल देते हैं। यहाँ क्राइस्टियन साइंस, प्रभु की रामबाण औषधि है, जो नश्वर मन की कमजोरी को ताकत देती है, - अमर और सर्वशक्तिमान दिमाग से ताकत, - और आध्यात्मिकता और खुद को मनुष्य से ऊपर उठाकर मानवता को शुद्ध इच्छाओं में, और यहां तक कि मनुष्य के लिए भी।

10. 407: 6-16

स्वभाव में सुधार, हमारी भूमि पर महसूस किया गया, मेटाफिजिकल हीलिंग के परिणाम हैं, जो हर उस पेड़ को काट देता है जो अच्छे फल नहीं देता है। यह विश्वास, कि पाप में कोई वास्तविक आनंद नहीं है, ईसाई विज्ञान के धर्मशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है। पापी के इस नए और सच्चे दृष्टिकोण के बारे में जानने के लिए,

उसे दिखाओ कि पाप कोई खुशी नहीं देता है, और यह ज्ञान उसके नैतिक साहस को मजबूत करता है और बुराई करने और अच्छे से प्यार करने की उसकी क्षमता को बढ़ाता है।

बीमार को ठीक करना और पापी को सुधारना क्रायश्चियन साइंस में एक ही बात है। दोनों इलाज के लिए एक ही विधि की आवश्यकता होती है और यह सत्य में अविभाज्य हैं।

11. 327: 23-3

गलत को पूरा करने और सही की घोषणा करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। लेकिन हम उस आदमी को कैसे सुधारेंगे जिसके पास नैतिक साहस से अधिक जानवर हैं, और अच्छे का सही विचार किसके पास नहीं है? मानव चेतना के माध्यम से, भौतिक लाभ के लिए अपनी गलती के नश्वर को खुशी पाने के लिए मनाएं कारण सबसे सक्रिय मानव संकाय है। यह बताएं कि भावनाओं को सूचित करें और नैतिक दायित्व के प्रति व्यक्ति की निष्क्रिय भावना को जागृत करें, और डिग्री के आधार पर वह मानव भावना के सुख और आध्यात्मिकता की भव्यता और आनंद की कुछ नहीं सीखेंगे जो सामग्री या कॉर्पोरल को शांत करता है तब वह न केवल बच जाएगा, बल्कि बच जाता है।

12. 495: 14-20

जब बीमारी या पाप का वहम आपको लुभाए, तो भगवान और उनके विचार से मज़बूती से जुड़े रहें। अपने विचारों में सिर्फ़ उनकी छवि को रहने दें। न तो डर और न ही शक को अपनी साफ़ समझ और शांत भरोसे पर हावी होने दें, कि जीवन को तालमेल वाला मानना—जैसा कि जीवन हमेशा से है—किसी भी दर्दनाक एहसास या उस विश्वास को खत्म कर सकता है, जो जीवन नहीं है।

13. 371: 26-32

विज्ञान और ईसाई धर्म के माध्यम से मानव जाति में सुधार होगा। दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके “हर तिनका को पूरा” कर सकते हैं।

14. 17: 8-15

और हमें प्रलोभन में न ले जाएँ, बल्कि हमें बुराई से बचाएं;
और परमेश्वर हमें प्रलोभन में नहीं ले जाता है, बल्कि हमें पाप, बीमारी और मृत्यु से बचाता है।

क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा सदा के लिए तुम्हारी है।
क्योंकि परमेश्वर अनंत है, सर्व-शक्ति है, सभी जीवन, सत्य, प्रेम, सभी पर शासक है, और सभी में है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।